



੧ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ॥

244

ਸਲੀਕ

ਸਮਝੌਤੀ ਕੀਤਾ

ਰਾਧ ਬਲਬੰਡ ਤਥਾ ਸਤੈ ਦੂਸਿ ਆਖੀ

ਸਿਖ ਮਿਸ਼ਨਰੀ ਕਾਲੇਜ (ਰਜਿ:)
ਲੁਧਿਆਣਾ



प्रारंभिक शब्द

पंजाबी साहित्य में वार उस को कहा जाता है जिस में किसी शूरवीर के किसी एक विशेष कारनामे को दिल को मुग्ध कर लेने वाली कविता के द्वारा वर्णित किया जाता है। वार में किसी योद्धा का सारा जीवन नहीं दर्शया जाता, बल्कि जीवन में से किसी एक घटना विशेष का ही वर्णन किया जाता है ताकि आम जनता में भी वही जीवन तरंगें लहरा सकें। वार के बंदों को पउड़ियां कहा जाता है। जैसे पउड़ी अर्थात् सीढ़ी के निचले ठौर से शुरू करके छत पर चढ़ने के लिए दूसरी, तीसरी, चौथी व अगली सीढ़ियों पर पैर रखते जाते हैं वैसे ही वार की चढ़ाई भी पउड़ियों के द्वारा ही होती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बसंत की वार महला ५ और सत्ते बलवंड की वार को छोड़ कर, बाकी सभी वारों में पउड़ियों के साथ श्लोक भी हैं जो कि पउड़ी के भावार्थ से मिलते जुलते हैं।

सत्ते की वार राय बलवंड और सत्ते डूमि की उच्चारण की हुई है। बलवंड और सत्ता, गुरु दरबार के रबाबी थे और गुरु अरजन देव जी के समक्ष कीर्तन किया करते थे। सत्ता की लड़की का विवाह था। उन्होंने सतगुरु जी से शादी के लिए आर्थिक सहायता मांगी। यह सहायता उन्हें आशा के अनुरूप न मिल सकी क्योंकि गुरु अर्जुन देव जी के बड़े भाई पृथी चंद के विरोध व नाकाबंदी के कारण, संगत द्वारा आई आर्थिक भेट व रसद, गुरु घर में बहुत थोड़ी ही पहुंच पाती थी। आशा के अनुरूप आर्थिक सहायता न मिलने के कारण सत्ता व बलवंड रुठ गए और उन्होंने गुरु दरबार में कीर्तन करना बंद कर दिया। गुरु अर्जुन देव जी खुद चल कर सत्ते व बलवंड को उनके घर मनाने के लिए गए पर वे न माने बल्कि अहं में आ कर कुबोल बोल बैठे और गुरु नानक देव जी की शान के विपरीत भी बातें कह डालीं। गुरु साहिब ने वापिस आ कर, संगत को सत्ते बलवंड से कीर्तन सुनने से मना कर दिया। सत्ते बलवंड को शायद आशा थी कि बाबा पृथी चंद के डेरे जा कर कीर्तन करके अपना जीविकोपार्जन कर लेंगे पर उधर उन की बात न बनी क्योंकि भाई गुरदास और बाबा बुढ़ा जी के प्रयासों के फलस्वरूप सिर्ख संगत को ज्ञान हो गया कि गुरु रामदास जी के बाद गुरगढ़ी के वारिस गुरु अर्जुन देव जी हैं न कि बाबा पृथी चंद। अतः सत्ता व बलवंड किसी के लायक भी न रहे और

घर में खाली बैठे भूखे मरने लगे। जब भूख से अति दुखी हो गए तो लाहौर से गुरु के सिख भाई लद्धा परउपकारी को लेकर गुरु जी से क्षमादान मिलने पर रबाबियों ने जिस मुंह से नानक घर की निंदा की थी, अब उसी मुंह से स्तुतिगायन किया जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में रामकली की वार राए बलवंड तथा सते दूसि आखी के नाम से पृष्ठ ९६६ पर अंकित है :

• इस वार में भी एक ही विचार घूम रहा है :

“गुरु की अपने चेले के सम्मुख रहिरास।” सारी वार का यही केंद्रीय विचार है ।

इस वार की कुल आठ पउड़ियां हैं । पहली तीन पउड़ियां बलवंड की उच्चारण की हैं और अंतिम पांच पउड़ियां सते की । वार की पहली पउड़ी में बलवंड कहता है कि गुरु नानक देव जी ने धर्म का एक नए तरीके से राज्य चलाया है । उन्होंने अपने चेले भाई लहिणा जी को अपने जैसा बना कर स्वयं गुरु होते हुए उस के आगे माथा टेका है :

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥

गुरि चेले रहरासि कीई, नानकि सलामति थीवदै ॥

दूसरी और तीसरी पउड़ी में भी बलवंड इसी बात को हैरान हो कर कहता है कि गुरु नानक शरीर बदल कर गुरु अंगद के स्वरूप में गुरगद्दी पर बैठे हुए हैं ।

नानक काइआ पलटु करि, मलि तखतु बैठा सै डाली ॥

बलवंड कहता है कि भाई लहिणा जी के अंदर गुरु नानक देव जी वाली ही ज्योति थी, जीवन का ढंग भी वही था, गुरु नानक ने केवल शरीर ही बदला है -

जोति ओहा, जुगति साइ, सहि काइआ फेरि पलटीअै ॥

गुरु नानक के नवीन धर्म मार्ग को विचार कर, सत्ता भी बहुत हैरान होता है । वार की छौथी पउड़ी में वह कहता है कि संसार के नाथ, गुरु नानक ने तो अन्य दिशा से भी गंगा बहा दी है :

होरिओ गंग वहाईअै, दुनिआई आखै कि किओनु ॥

वार की छठी पउड़ी में सत्ता, गुरु अमरदास जी के बारे में अचंभे वाली मर्यादा का वर्णन करते हुए कहता है :

सो टिका, सो बैहणा, सोई दीबाणु ॥

सत्ता कहता है कि पोते, भाव गुरु अमरदास जी के माथे पर भी वही नूर है, वही तख्त है और वही दरबार है, जो गुरु नानक देव और गुरु अंगद

देव का था ।

सातवीं पउड़ी में सत्ता चौथी पातशाही, श्री गुरु रामदास जी को ध्यान में रख कर, अपने विचार इस प्रकार प्रकट करता है :

नानक तू, लहणा तू है, गुर अमर तू, वीचारिआ ॥

अंतिम पउड़ी में सत्ता, गुर अर्जुन देव जी के संबंध में कहता है :

तखत बैठा अरजन गुर, सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥

उगवणहु तै आथवणहु, चहु चकी कीअनु लोआ ॥

अंत में गुरु साहिबान की महिमा का वर्णन करते हुए, वार को नीचे लिखे शब्दों से समाप्त करता है:

चारे जागे चहु जुगी, पंचाइणु आपे होआ ॥

भाव चारों गुरु, स्वयं अपने समय में रोशन हुए, वाहिगुरु स्वयं ही उनमें प्रकट हुए ।

रामकली की वार

राय बलवंड तथा सतै झूमि आखी

रामकली राग की वह वार जो राय बलवंड और सतै मिरासी (झूम) अथवा रबाबी ने कह सुनाई ।

१८० (इक ओऽअंकार) सतिगुर प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे, किउ बोलु होवै जोरवीवदै ॥

दे गुना सति भेण भराव है, पारंगति दानु पड़ीवदै ।

नानकि राजु चलाइआ, सचु कोटु सताणी नीव दै ॥

पद अर्थ : नाउ - स्तुति गायन । करता कादरु - अकाल पुरख । बोलु - मुंह से बोली हुई बात । जोरवीवदै - तोलने के लिए । दे गुना सति - सत्य आदि के दैवी गुण । पारंगति - पार लगने वाली आत्मिक अवस्था । पड़ीवदै - हासिल(प्राप्त) करने के लिए । कोटि - किला । सताणी - सत्ता(बल) वाली । नीव - नींव ।

अर्थ : यदि अकाल पुरख, परम-पिता परमात्मा, किसी मनुष्य की स्वयं स्तुति करे तो उसको तोलने के लिए किसी दिशा से कोई बात नहीं हो सकती । संसार समुद्र से पार करवाने वाली आत्मिक अवस्था का दान लेने के वास्ते जो सति आदि के ईश्वरीय गुण लोग बहुत प्रयासों से अपने अंदर पैदा करते हैं, वे गुण सतगुरु के तो बहन भाई हैं अथवा उनके अंदर स्वतः ही प्रकट रूप हैं । इस बड़ी महानता वाले गुरु नानक देव जी ने, सत्य रूपी किला बना कर और पक्की नींव रख कर, धर्म का राज्य चलाया है ।

लहणे धरिओनु छतु सिरि, करि सिफती अमृतु पीवदै ।

मति गुर आतम देव दी, खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥

पद अर्थ : धरिओनु - उसने(गुरु नानक ने) धरा है । छतु-छत्र । पीवदै - पीते हैं । आत्म देव - अकाल पुरख, परमपिता परमात्मा । खड़गि - कृपाण । पराकुइ - पराकउ(शक्ति) द्वारा । जीअ दै - जीवन दान (आत्म-दान) दे कर

अर्थ : गुरु नानक देव जी ने अकाल पुरख द्वारा प्रदत्त, मति रूपी कृपाण द्वारा अथवा बल से, भाई लहणा जी के अंदर से पहला जीवन बाहर करके, आत्मिक जीवन प्रदान किया । फिर उन्होंने(गुरु नानक देव जी ने) भाई लहिणा जी के सिर पर गुरगढ़ी का छत्र धरा, जो प्रभु का स्तुति गायन

करके नाम- अमृत पी रहे थे ।

गुरि चेले रहरासि कीई, नानक सलामति थीवदै ॥

सहि टिका दितासु जीवदै ॥१॥

पद अर्थ : रहरासि - प्रणाम । सलामति थीवदै - अपनी सलामती में ही (जिंदा जी) । सहि - मालिक(गुरु) ने । दितोसु - उसको दिया । जीवदे - जिंदा जी ही ।

अर्थ : गुरु नानक देव जी ने अपने जिंदा जी, अपने सिख भाई लहणा जी के सम्मुख प्रणाम किया और गुरगद्दी प्रदान की ।

लहिणे दी फेराइਐ, नानका दोही खटीਐ ॥

जोति ओहा जुगति साइ, सहि काइआ फेरि पलटीਐ ॥

पद अर्थ : फेराइਐ - फिर गई (फैल गई) । दोही - (शोभा) की धूम । खटीऐ - बरकत के कारण । साइ - वही । जुगति - जीवन शैली । सहि - शह(गुरु) ने । काइआ - शरीर ।

अर्थ : गुरुपद मिलने के उपरांत, गुरु नानक देव जी की महानता की धूम के फलस्वरूप, भाई लहिणा जी की शोभा की धूम मच गई, क्योंकि भाई लहणा जी के अंदर वही ज्योति थी जो गुरु नानक देव जी में थी । जीवन शैली भी वही थी । गुरु नानक देव जी ने तो केवल काया ही पलटी थी अथवा शरीर ही परिवर्तित किया था ।

झुलै सु छतु निरंजनी, मलि तरवतु बैठा गुर हटीऐ ॥

करहि जि गुर फुरमाइआ, सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥

पद अर्थ : सु छतु - सुंदर छत्र । निरंजनी - ईश्वरीय । मलि - कब्जा कर । गुर हटीऐ - गुर के घर में । करहि - करते हैं । फुरमाइआ - फुर्माया हुआ हुकम । जोग - बताई हुई राह(युक्ति) । अलूणी - नमक के बिना । सिल अलूणी चटीऐ - नमकहीन सिल चाटने के समान कठिन काम ।

अर्थ : भाई लहिणा जी के सिर पर सुंदर ईश्वरीय छत्र झूल रहा है । वह (भाई लहिणा जी) गुरु नानक देव जी के घर में, नाम की निधि बांटने के वास्ते गद्दी पर बैठे हुए हैं और अपने गुरु द्वारा दर्शाए हुए आदेश का पालन कर रहे हैं । यह आदेश पालन रूपी योग(तपस्या), बिना नमक के सील चाटने के तुल्य बहुत कठिन काम है ।

लंगरु चलै गुर सबदि, हरि तोटि न आवी खटीऔ ॥

खरचे दिति खसंम दी, आप खहदी खैरि दबटीऔ ॥

पद अर्थ : तोटि न आवी - टोटा(घाटा) नहीं पड़ता । खटीऔ - कमाई में । दिति - प्रदत्त निधि । आप खहदी - स्वयं घटित हुई । खैरि - खैरात में । दबटीऔ - खूब बांटी ।

अर्थ : गुरु नानक के घर में गुरु के शबद का लंगर चल रहा है, पर भाई लहणा जी की नाम की व्यवहारिक कमाई में कोई कमी नहीं होती है । वह (भाई लहणा जी) अकाल पुरख द्वारा दी हुई नाम की निधि का स्वयं भी प्रयोग करते हैं और दूसरों को भी दबा-दब बांटते जाते हैं ।

होवै सिफति खसम दी, नूर अरसहु कुरसहु झटीऔ ॥

तुधु डिठै सचे पातिसाह, मलु जनम जनम दी कटीऔ ॥

पद अर्थ : नूर- प्रकाश । अरस- आकाश । कुरस- सूर्य चांद की टिकिया । अरशहु कुरसहु - आत्मिक मंडल(रूहानी देस) से । झटीऔ - झड़(बस) रहा है ।

अर्थ - गुरु अंगद देव जी के दरबार में शहु (पति) अकाल पुरख, परमपिता परमात्मा का स्तुति गायन हो रहा है । आत्मिक मंडल से नूर बरस रहा है । हे सचे पातिशाह(सचे सतगुरु) गुरु अंगद देव जी ! तेरा दर्शन करने से कई जन्मों के विकारों की मैल कट जाती है ।

सचु जि गुरि फुरमाइआ, किउ देदू बोलहु हटीऔ ।

पुत्री कउलु न पालिओ, करि पीरहु कंनु मुरटीऔ ॥

पद अर्थ : एदू बोलहु - इस बोल से । किउ हटीऔ - कैसे हटाया जा सके ? । पुत्री - पुत्रों ने । कउल - वचन (हुकम) । न पालिओ - नहीं माना । कंन - कंध । करि कंन - कंधा अथवा मुंह मोड़कर । पीरहु - पीर (सतगुरु) की ओर से । मुरटीऔ - मोड़ते रहे ।

पद अर्थ : उचाइनि- उठाते (सहारा देते) हैं । भारु छटीऔ - छटि का भार । थटीऔ - नियुक्त किया । उवटीऔ - अर्जित लाभ ।

अर्थ : हे गुरु अंगद देव जी ! गुरु नानक साहिब ने जो भी आदेश किया, आपने उसे सत्य करके माना और उसका पालन करने से मना नहीं किया । सतगुरु जी के बेटों (बाबा श्री चंद जी व बाबा लक्ष्मी चंद जी) ने आज्ञा पालन नहीं किया । वे गुरु से मुंह मोड़ते ही रहे और आदेश का पालन नहीं किया ।

दिल खोटै आकी फिरनि,
बनि भारु उचाइनि छाटीओ ॥

जिनि आरवी सोई करे, जिनि कीती तिनै थटीओ।
कउणु, हारे, किनि उवटीओ ॥२॥

पद अर्थ : उचाइनि- उठाते (सहारा देते) हैं । भारु छटीओ - छटि का भार । थटीओ - नियुक्त किया । उवटीओ - अर्जित लाभ।

अर्थः जो लोग खोटे दिल के कारण गुरु से टूटे हुए फिरते हैं, वे दुनियां के धंधों की छट का भार बांध कर उठाए रखते हैं । पर जीवों के भी वश में क्या है? अपनी शक्ति के आश्रय, इस आदेश वाले खेल में न कोई हारने वाला है और न कोई जीतने योग्य है । जिस गुरु नानक ने इस ईश्वरेच्छा को मानने का आदेश दिया, वह स्वयं ही सब कुछ करने वाला था । जिस ने इस आदेश के खेल को रचा है उसने स्वयं ही भाई लहणा जी को आदेश को मानने योग्य बनाया ॥२॥

जिनि कीती सो मंनणा, को सालु, जिवाहे साली ॥

धरमराइ है देवता, लै गला करे दलाली ॥

पद अर्थ : सालु - श्रेष्ठ । जिवाहे - तारा मीरा । साली - मुंज । लै गला - बातें, विनतियां सुनकर । दलाली - बिचौलियापन ।

अर्थ : जिस गुरु अंगद देव जी ने नम्रता में रह कर सतगुरु का आदेश मानने का संघर्ष किया वह मान्य हो गया । दोनों में से कौन उत्तम है ? तारा मीरा या मुंजी? तारामीरा टिब्बों पर ही अच्छा फलता है पर मुंजी गहराई वाले स्थान पर पलती है। इसलिए नीच के गहरे स्थान पर रह कर पलने वाली मुंजी ही अच्छी है । इसी प्रकार नीचा रह कर मनुष्य आदर पा लेता है । श्री गुरु अंगद देव जी धर्म के राजा हो गए, धर्म के देवता हो गए हैं, जीवों की विनतियों को सुन कर प्रभु के संग जोड़ने का बिचौलापन निभा रहे हैं ।

सतिगुरु आखै सचा करे, सा बात होवै दरहाली ॥

गुर अंगद दी दोही फिरी, सचु करतै बंधि बहाली ॥

पद अर्थ : सचा - वाहिगुरु(अकाल पुरख) । दरहाली - तुरत(उसी समय) । दोही फिरी - बड़प्पन की धूम पड़ गई । करतै - करतार(वाहिगुरु) ने । बंधि-बांध कर, पक्की करके । बहाली - टिका दिया ।

अर्थ : अब सतगुरु, अंगद देव जी जो वचन करते हैं, वाहिगुरु वही कुछ करता है और बातचीत एक दम मानी जाती है । सतगुरु अंगद देव जी

की महानता की धूम मच गई है और सच्चे करतार (वाहिगुरु) ने यह पक्का कर के टिका दिया है ।

नानकु काइआ पलटु करि, मलि तखतु बैठा सै डाली ॥

दरु सेवे उमति खड़ी, मसकलै होइ जंगाली ॥

दर दरवेसु, खसंम दै, नाइ सचै बाणी लाली ॥

पद अर्थ : काइआ - शरीर । पलटु करि - बदल कर । मलि तखतु - गद्दी संभाल कर । सै डाली - सैंकड़े डालियों अथवा सेवकों वाला । उमति - संगत । खड़ी - खड़ी हुई, प्रेम से । दरु सेवे - दर पर बैठी है । मसकलै - मसकले के साथ । दरवेसु - 'याचक' । बाणी - बनी हुई है ।

अर्थ : सैंकड़ों सेवकों वाला गुरु नानक, शरीर बदल कर गुरु अंगद देव जी के स्वरूप में गद्दी पर बैठा हुआ है । संगत, गुरु अंगद देव जी के घर पर बैठ कर प्रेम से सेवा कर रही है और अपने आपको पवित्र कर रही है जैसे कि जंग लगी धातु मसकल से साफ हो जाती है । श्री गुरु नानक देव जी के दर पर गुरु अंगद देव जी, नाम की निधि को याचक बनकर खड़े हैं । वाहिगुरु के सच्चे नाम सुमिरन द्वारा गुरु अंगद देव जी के मुखड़े पर लाली बनी हुई हैं ।

बलवंड खीवी नेक जन, जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥

लंगरि दउलति वंडीओ, रसु अंमृतु खीरि धिआली ॥

गुरसिखा के मुख उजले, मनमुख थीए पराली ॥

पद अर्थ : खीवी - गुरु अंगद देव जी की सुपत्नी, माता खीवी जी । पत्राली - पत्र वाली, घणी, सधन । धिआली - धी वाली । पराली - दाने झड़ा हुआ मुंजी का पौधा जिस का रंग पीला हो गया होता है ।

अर्थ: हे बलवंड(रबाबी)! माता खीवी जी भी बहुत भले हैं । उनकी छाया सधन पत्तों वाली अथवा घनी है । जैसे गुरु अंगद देव जी के सत्संग रूपी लंगर में नाम की दौलत बांटी जा रही है, नाम रूपी अमृत रस बांटा जा रहा है, वैसे ही माता खीवी जी की सेवा के फलस्वरूप, लंगर में सबको धी वाली खीर बांटी जा रही है ।

श्री गुरु अंगद देव जी के दर पर आ कर, गुरसिखों के माथे तो खिले हुए हैं पर गुरु से मुंह मोड़े हुए लोगों में ईर्ष्या के कारण, पराली यानी भूसी की तरह पीले ही फिर जाते हैं ।

पए कबूलु ख्वसंम नालि, जां घाल मरदी घाली ॥

माता खीवी सहु सोइ, जिन गोइ उठाली ॥३॥

पद के अर्थ : पए कबूल - स्वीकार्य हो गए । ख्वसंम नालि - अपने सतगुरु के साथ । मरदी घाल - मर्दों (बहादुरों) वाला संघर्ष । गोइ - धरती ।

अर्थ : माता खीवी जी के पति, गुरु अंगद देव जी ऐसे थे जिन्होंने सारी धरती का भार उठा लिया था । जब जब गुरु अंगद देव जी ने मर्दों की तरह संघर्ष किया तो वह अपने सतगुरु, गुरु नानक देव जी के दर पर स्वीकार्य हुए ॥३॥

होरिओ गंग वहाईऐ, दुनिआई आखै कि किओनु ॥

नानक ईसरि जग नाथि, उचहदी वैण विरिकिओनु ॥

पद अर्थः होरिओ - अन्य दिशा से । वहाईऐ - बहाई है, चलाई है । दुनिआई - दुनियां के लोग । कि- क्या । किओनु - किया है, उसने । ईसरि - ईश्वर ने, मालिक ने, गुरु ने । जग नाथि - जगन्नाथ ने, जगत के नाथ ने । उचहदी-सीमा से ऊँचा । वैण-बचन । विरिकिओनु - उसने बोला है ।

अर्थ : दुनियां कहती है कि संसार के नाथ, गुरु नानक ने अति उत्तम व सीमा में रहकर बचन बोले हैं । उसने अन्य दिशा से गंगा चला दी है । यह उसने क्या किया है ?

माधाणा परबतु करि, नेत्रि बासकु, सबदि रिड़किओनु ॥

चउदह रतन निकालिअनु, करि आवागउण चिलकिओनु ॥

पद अर्थ : परबतु - सुमेर पर्वत, भाव ऊँची सुरति । बासकु - सांपों का राजा । नेत्रि - रस्सी में । करि नेत्रि बासकु - बासक नाग को रस्सी में बांध कर, भाव मन रूपी सर्प को नेत्रा यानी रस्सी बना कर अथवा नियन्त्रित करके । निकालिअनु - निकाले । आवागउण - संसार । चिलकिओनु - उसने चमकाया भाव सुख-रूप बना दिया ।

अर्थ : उस, गुरु नानक ने ऊँची सुरति को बिलौना बना कर, मन रूपी बासक नाग को नेत्रे यानी रस्सी में डालकर, भाव नियन्त्रित करके, शब्द में बिलोया यानी शब्द की विचार की है। इस तरह उस गुरु नानक ने इस शब्द समुद्र में से देवताओं के समुद्र बिलौने की भाँति, चौदह रत्न निकाले और इस प्रयास के फलस्वरूप संसार को सुंदर बना दिया है ।

कुदरति अहि वेरवालीअनु, जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥
लहणे धरिओनु छत्र सिरि, असमानि किआडा छिकिओनु ॥

पद अर्थ : कुदरति - शक्ति, सामर्थ्य। अहि - ऐसी ही । वेरवालीअन - उसने दिखलाया । जिणि - जीत कर । ऐवड - इतना बड़ा । पिंड - शरीर । ऐवड पिड - इतनी ऊँची आत्मा । ठिणकिओनु - उस ने ठणकाया(टुनकाया भाव परखा) किआडा - गर्दन । छिकिओनु यानी छिकि - ओनु - उसने खींचा । ओनु - उस ने ।

अर्थः उस गुरु नानक ने ऐसी शक्ति दिखलाई कि पहले भाई लहणा जी का मन जीत कर इतनी ऊँची आत्मा को परखा, फिर उन के शीश पर गुरिआई का छत्र धरा और उन की शोभा आसमान तक पहुंचाई ।

जोति समाणी जोति माहि, आपु आपै सेती मिकिओनु ॥
सिखां पुत्रां घोखि कै, सभ उमति वेरवहु जि किओनु ॥
जां सुधोस तां लहणा टिकिओनु ॥४॥

पद अर्थ : मिकिओनु - उस ने बराबर किया । घोखि कै - परख कर । उमति - संगत । किओनु - उसने किया । सुधोसु - उस को परिशोधित किया है । टिकिओनु - उसने चुना है ।

अर्थ : श्री गुरु नानक देव जी की आत्मा भाई लहणा जी की आत्मा में ऐसी मिल गई है कि गुरु नानक ने अपने आपको, अपने स्व, भाव भाई लहणा जी के साथ, समान व्यवहार कर लिया । हे संसारी संगत! देखो! जो उस गुरु नानक ने किया । उन्होंने अपने सिखों व पुत्रों को परख कर जब परिशोधन किया तो उन्होंने अपनी गद्दी पर बिठाने के लिए भाई लहणा जी को चुना ॥४॥

फेरि वसाइआ फेरुआणि, सतिगुरि खडूर ॥

जपु तपु संजमु नालि तुधु, होरु मुचु गर्लु ॥

पद अर्थ : फेरुआणि सतिगुरु - फेरु के पुत्र सतगुरु (अंगद देव जी) । मुचु - बहुत । गर्लु - अहंकार

अर्थ : गुरगद्दी मिलने के पश्चात बाबा फेरु जी के पुत्र, सतगुरु अंगद देव जी ने करतारपुर से आ कर खडूर साहिब की रौनक को बढ़ाया । हे सतगुरु जी! और सारा संसार तो बहुत अहंकार करता है पर तेरे पास जप, तप, संयम आदि के फलस्वरूप तूं पहले की भाति साधु-स्वभाव में ही रहा ।

लब विणाहे माणसा, जिउ पाणी बूरु ॥

वरिः औ दरगह गुरु की, कुदरती नूर ॥
जितु सु हाथ न लभई, तूं ओहु ठर्लर ॥
नउनिधि नामु निधानु है, तुधु विचि भरपूर ॥

पद अर्थ : विणाहे - निवास (नास) करता है । वरिऔ- बरसात होने के कारण । कुदरती - दैवी । हाथ - गहराई का अंत । ठर्लर - ठिठुरता पानी, शीतल समुद्र । नउनिधि - नौ खजाने । निधानु - खजाना । भरपूर - मुँह तक भरा हुआ ।

अर्थ : जैसे पानी को बूर खराब करता है, वैसे ही मनुष्यों को 'लालच बर्बाद करता है पर गुरु नानक की दरगाह में नाम की वर्षा होने के कारण गुरु अंगद देव जी पर दैवी नूर चमक रहा है । हे गुरु अंगद देव जी! तूं वह शीतल समुद्र है जिस की गहराई को नापा नहीं जा सकता । प्रभु का नाम रूपी खजाना संसार के नौ खजाने समझो । हे सतगुरु! वह खजाना तेरे हृदय में ऊपर तक भरा हुआ है ।

निंदा तेरी जो करे, सो वंजै चूर ॥
नेडै दिसै मात लोक, तुधु सुझै दूर ॥
फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाइरु ॥५॥

पद अर्थ : वंजै चूर - चूरो चूर हो जाता है । नेडै - समीप के ।

अर्थ : हे गुरु अंगद देव जी! जो व्यक्ति तेरी निंदा करे वह स्वयं ही चूरो चूर अथवा तबाह हो जाता है । सांसारिक जीवों को तो समीप के ही पदार्थ दिखलाई दिये हैं, पर हे सतगुरु! तुझे, भविष्य में क्या होना है, इसका भी पता लग जाता है । फिर बाबा फेरु जी के पुत्र सतगुरु अंगद देव जी ने खड़र साहिब को आ भाग्य लगाए ।५॥

सो टिका, सो बैहणा, सोई दीबाणु ॥
पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥
जिनि बासकु नेत्रै घतिआ, करि नेही ताणु ॥
जिनि समुंदु विरोलिआ, करि मेरु मधाणु ॥
चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाण ॥

पद अर्थ : टिका- माथे का नूर । बैहणा- तरख्त । दीबाणु- दरबार । जेविहा- जैसा । नेही - रस्सी रूपी गांठ । बासकु- सांपों का राजा, (मन रूपी नाग) ताणु- - बल । विरोलिआ - बिलोआ । मेरु - सुमेर पर्वत (ऊँची सुरति) । कीतोनु - उस ने किया ।

अर्थ : पोता गुरु अमरदास भी माना हुआ गुरु है क्योंकि वह श्री गुरु नानक व गुरु अंगद साहिब की भाति ही है । इस के माथे पर भी वही नूर है । वही तत्क्षण और वही दरबार है जो गुरु नानक देव व गुरु अंगद देव जी का था । इस ने भी आत्मिक शक्ति को रस्सी की गांठ बना कर मनरूपी नाग को नियन्त्रित किया हुआ है । ऊँची सुरति - रूपी सुमेर पर्वत को बिलौना बना कर शबद रूपी चौदह रत्न निकाले हैं जिन से इस ने ज्ञान रूपी समुद्र को बिलोआ है और ईश्वरीय गुण रूपी प्रकाश पैदा किया है ।

घोड़ा कीतो सहज दा, जतु कीओ पलाणु ॥

धणखु चढ़ाइओ सत दा, जस हंदा बाणु ॥

कलि विचि धू अंधारु सा, चढ़िआ रै भाणु ॥

सतहु खेतु जमाइओ, सतहु छावाणु ॥

पद अर्थ : जतु - इद्रियों को विकारों से रोकने की शक्ति । पलाणु - काठी । कलि-क्लेशों भरी दुनियां । धू अंधारु - घोर अंधकार । रै-किरणें । भाणु - सूर्य । सतहु - सत्य से, सुच्चे आचरण की शक्ति से । छावाणु - छाया, राखी ।

अर्थ : गुरु अमरदास जी ने सहज अवस्था का घोड़ा बनाया, इद्रियों को विकारों से रोके रखने की शक्ति को काठी बनाया, निर्मल आचरण का धनुष्य कसा और प्रभु के स्तुति गायन का तौर पकड़ा। विकारों के कारण दुनियां में घोर अंधकार था। ऐसा समझो कि गुरु अमरदास की किरणों वाला सूर्य चढ़ गया जिस ने 'सति' की शक्ति से ही उजड़ी खेती जमाई और सत्य से ही उस की रक्षा की ।

नितु रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥

चारे कुँडा सीझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥

आवागउणु निवारिओ, करि नदरि नीसाणु ॥

पद अर्थ : खाणु - खंड । चारे कुँडा - चारों ओर । सुझीओसु - उस को सूझी । आवागवन - जीवन-मृत्यु का भंवर । नीसाणु - निशान, राहदारी ।

अर्थ: हे गुरु अमरदास जी! तेरे लंगर में भी नित्य धी, मैदा व खांड आदि उत्तम पदार्थों का प्रयोग हो रहा है । जिस व्यक्ति ने अपने मन में तेरे शबद को टिका लिया है उसको चारों ओर रमे हुए प्रभु की सूझ आ गई है । हे सतगुरु जी! जिस को आपने कृपा की नजर से शबद रूपी राहदारी

प्रदान की है उस का जन्म-मृत्यु का भंवर मिटा दिया है ।
 अउतरिआ अउतारु लै, सो पुरखु सुजाणु ॥
 झरवड़ि वाउ न डोलई, परबतु मेराणु ॥
 जाणै बिरथा जीअ की, जाणी हू जाणु ॥
 पद अर्थ : अउतरिआ - पैदा हुआ है । पुरखु सुजाणु - सुजान
 अकाल पुरख । मेराणु - सुमेर पर्वत, पहाड़ । बिरथा जीअ की - दिल
 की वेदना (पीड़ा) ।

अर्थ : वह सुधड़ सुजान अकाल पुरख स्वयं गुरु अमरदास के रूप में
 अवतार ले कर संसार में आया है । गुरु अमरदास जी विकारों की आंधी में
 नहीं डोलते । वह तो सुमेर पर्वत की भाँति हैं । वे सब कुछ जानते हैं, जीवों
 के दिल की पीड़ा को पहचानते हैं ।

किआ सालाही सचे पातसाह, जा तू सुधडु सुजाणु ॥

दानु जि सतिगुर भावसी, सो सते दाणु ॥

पद अर्थ : सुधड़ - सुंदर । सुजान - बुद्धिमान । दानु - कृपा ।
 भावसी - अच्छी लगे । सते - सत्ता डूम(रबाबी) ।

अर्थ : हे अटल राज वाले पातशाह ! मैं तेरी क्या स्तुति करूँ ? तूं सुंदर
 आत्मा वाला और बुद्धिमान है । मुझ, सत्ते रबाबी को तेरी वही कृपा अच्छी
 है जो सतगुरु जी आपको अच्छी लगती है ।

नानक हंदा छत्रु सिरि, उमति हैराणु ॥

सो टिका सो बैहणा, सोई दीबाणु ॥

पियू दादे जेविहा, पोत्रा परवाणु ॥६॥

पद अर्थः हंदा - का । सिरि - सिर के ऊपर । उमति - संगत ।

अर्थः गुरु अमरदास जी के सिर पर गुरु नानक देव जी वाला छत्र
 है । संगत देख कर हैरान हो रही है । पोता गुरु अमरदास भी माना हुआ गुरु
 है क्योंकि वह भी गुरु नानक देव जी और गुरु अंगद देव जी जैसा ही है ।
 इसके माथे पर भी वही नूर है, वही तरक्त है, वही दरबार है जो गुरु नानक
 देव जी और गुरु अंगद देव जी का था ॥६॥

धंनु धंन रामदास गुरु, जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥

पूरी होई करामाति, आपि सिरजणहारे धारिआ ॥

सिखी अते संगती, पारब्रह्मु करि नमसकारिआ ॥

पद अर्थ : सिरिआ - पैदा किया । सिखी - सिखों ने ।

अर्थ : गुरु रामदास जी धन्य, धन्य हैं। जिस प्रभु ने उन को पैदा किया उसने उनको सुंदर भी बनाया। यह एक पूर्ण करामात हुई है कि सृजनकर्ता वाहिगुरु ने स्वयं अपने आपको उन के अंतःकरण में टिकाया है। सभी सिखों और संगत ने उनको वाहिगुरु का रूप जानकर नमस्कार की है।

अटल अथाहु अतोलु तू, तेरा अंत न पारावारिआ ॥

जिनी तूं सेविआ भाउ करि, से तुधु पारि उतारिआ ॥

लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु, मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥

धंनु सु तेरा थानु है, सचु तेरा पैसकारिआ ॥

पद अर्थः अटलु - सदा कायम रहने वाला। अथाह - जिसकी गहराई को न नापा जा सके। पारावारिआ - इस पार और उस पार का किनारा। भाउ - प्रेम। सपरवारिआ - परिवार सहित। पैसकारिआ - पेशकारा(स्वागती रौनक) संगतरूपी पासार।

अर्थ : हे गुरु रामदास जी! आप सदा अटल रहने वाले हो। आपको तोला नहीं जा सकता। भाव आपके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। आप ऐसे आध्यात्मिक समुद्र हैं जिसकी गहराइयों को नापा नहीं जा सकता। इस पार और उस पार किनारे का अंत नहीं पाया जा सकता। जिन्होंने प्यार से तेरे आदेश को माना है, आपने उस को संसार समुद्र से पार लगा दिया है। आपने उन के अंदर से लोभ, काम, क्रोध तथा मोह व अन्य सारे विकार मारकर निकाल दिए हैं। हे सतगुरु रामदास जी ! मैं उस स्थान से बलिहार जाता हूं जहां पर आप बस रहे हो। आपकी संगत सति (अटल) है।

नानक तू, लहणा तू है, गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥

गुरु डिठा ता मनु साधारिआ ॥१॥

पद अर्थ : वीचारिआ - मैंने समझा है। साधारिआ - टिकाने आया।

अर्थ : हे गुरु रामदास जी! आप ही गुरु नानक हो, आप ही बाबा लहिणा हो और मैंने आपको ही गुरु रामदास समझा है।

जिस ने भी गुरु रामदास जी के दर्शन किए हैं उसी का मन टिकाने आ गया है ॥१॥

चारे जागे चहु जुगी, पंचाइणु आपे होआ ॥

आपीनै आपु साजिओनु, आपे ही थंमि खलोआ ॥

आपे पटी कलम आपि, आपि लिखणहारा होआ ॥

सभ उमति आवण जावणी, आपे ही नवा निरोआ ॥

पद अर्थ : चारे-पहले चार गुरु । चहु जुगी - अपने चार जामों (अवतरण) में । जागे - प्रकट हुए । पंचाइण - पांच तत्वों का स्त्रोत अकाल पुरख । आपीनै - अकाल पुरख ने स्वयं ही । साजिओनु - उस ने सृजित किया । थंमि - थाम कर(सहारा दे कर) । लिखणहारा - लिखने वाला पदचिन्ह डालने वाला । उमति - सृष्टि । निरोआ - रोग रहित (निर-रोग) ।

अर्थ : चारों गुरु अपने अपने समय पर प्रकट हुए हैं । अकाल पुरख स्वयं ही उन में व्याप्त हुआ । अकाल पुरख ने स्वयं ही अपने आपको सृष्टि के रूप में प्रकट किया है और स्वयं ही गुरु रूप हो कर सृष्टि को सहारा दे रहा है । जीवों को सूझ देने के लिए अकाल पुरख स्वयं ही तरक्ती अर्थात पटटी बना है, वह स्वयं ही कलम है और गुरु रूप हो कर स्वयं ही तरक्ती पर पूर्ने (कटखणे, पूरणे, चिन्ह) डालने वाला है । सारी दुनियां तो जन्म मरण के भंवर में हैं पर अकाल पुरख स्वयं हमेशा नया व तरोताज़ा है ।

तरक्ति बैठा अरजन गुरु, सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥

उगवणहु तै आथवणहु, चहु चकी कीअनु लोआ ॥

पद अर्थ : खिवै - चमकता है । उगवणहु ते आथवणहु - सूर्य के चढ़ने व ढूबने से । चहु चकी - चारों ओर । कीअनु - उसने किया है । लोआ - लोअ (प्रकाश) ।

अर्थ : जिस तरक्त पर पहले चार गुरु बैठे थे, उस तरक्त पर गुरु अर्जुन देव जी बैठे हुए हैं । सतगुरु की चानणी चमक रही है । सूर्य चढ़ने से ढूबने तक चारों ओर इस गुरु अर्जन देव ने प्रकाश कर दिया है ।

जिनी गुरु न सेविओ, मनमुखा पइआ मुोआ ॥

दूणी चउणी करामाति, सचे का सचा ढोआ ॥

चारे जागे चहु जुगी, पंचाइण आपे होआ ॥८॥

पद अर्थ : मुोआ - मरी, मौत । करामाति - शोभा । ढोआ - तोहफा ।

अर्थ : अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्यों ने गुरु का आदेश नहीं माना, उनको मौत पड़ गई । भाव वे आत्मिक मौत मर गए । श्री गुरु अर्जुन देव जी की दिन दूनी व रात चौगुनी महानता हो रही है । दुनियां के लिए गुरु सच्चे अकाल पुरख की सच्ची करामात, भाव सौगात है । चारों गुरु स्वयं अपने समय में प्रकट हुए, वाहिगुरु उन में प्रकट हुआ है ॥८॥

शब्द उच्चारण

(1) बिंदी () सहित उच्चारण करने वाले शब्द :

(ਬਿੰਦੀ ਸਹਿਤ ਉਚਾਰਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦ)

ਨਾਉਂ, ਕਿਉਂ ਹੈਂ, ਨੀਂਵ ਸਿਫ਼ਤੀਂ, ਪੀਂਵਦੈ, ਜੋਰ, ਸ਼ਾਹ, ਕਾਇਆਂ, ਕਰਹਿਂ, ਸ਼ਬਦ, ਅਰਸ਼ਾਂ, ਕੁਰਸ਼ਾਂ, ਪਾਤਸ਼ਾਹ, ਐਦੂ, ਬੋਲੋਂ, ਪੁਤ੍ਰੀਂ, ਪੀਰੋਂ, ਗਲ਼ਾਂ, ਸੈਂ, ਡਾਲੀ, ਦਰਵੇਸ਼ਜਨ, ਛਾਉਂ, ਪਤ੍ਰਲੀ, ਗੁਰਸਿਰਖਾਂ, ਮਰਦੀਂ, ਸ਼ਹ, ਹੋਰਿੰਓ, ਈਸ਼ਰ, ਚਉਦਾਂਹ, ਪਿੰਡ, ਮਾਹਿਂ, ਮਾਣਸਾਂ, ਜਿਤਾਂ, ਸਤੋਂ, ਛਾਂਵਾਣ, ਕੁੰਡਾਂ, ਮਹਿਂ, ਨੀਂਸ਼ਾਣ, ਸਾਲਾਹੀਂ, ਸਿਰਖੀਂ, ਸਾਂਗਤੀਂ, ਤੂਂ, ਪੈਸ਼ਕਾਰਿਆਂ, ਚਹੁਂ ਜੁਗੀਂ, ਨਵਾਂ ਤਗਵਣਾਂ, ਆਥਵਣਾਂ, ਚਕੀਂ ਮਨਮੁਖਵਾਂ ।

(ਨਾਉਂ, ਕਿਉਂ ਹੈਂ, ਨੀਂਵ, ਸਿਫ਼ਤੀਂ, ਪੀਂਵਦੈ, ਜੋਰ, ਸ਼ਹ, ਕਾਇਆਂ, ਕਰਹਿਂ, ਸ਼ਬਦ, ਅਰਸ਼ਾਂ, ਕੁਰਸ਼ਾਂ, ਪਾਤਸ਼ਾਹ, ਐਦੂ, ਬੋਲੋਂ, ਪੁਤ੍ਰੀਂ, ਪੀਰੋਂ, ਗੱਲਾਂ, ਸੈਂ, ਡਾਲੀਂ, ਦਰਵੇਸ਼ ਜਨ, ਛਾਉਂ, ਪਤ੍ਰਲੀ, ਗੁਰਸਿਰਖਾਂ, ਮਰਦੀਂ, ਸ਼ਹ, ਹੋਰਿੰਓ, ਈਸ਼ਰ, ਚਉਦਾਂਹ, ਪਿੰਡ, ਮਾਹਿਂ, ਮਾਣਸਾਂ, ਜਿਤਾਂ, ਸਤੋਂ, ਛਾਂਵਾਣ, ਕੁੰਡਾਂ, ਮਹਿਂ, ਨੀਂਸ਼ਾਣ, ਸਾਲਾਹੀਂ, ਸਿਰਖੀਂ, ਸਾਂਗਤੀਂ, ਤੂਂ, ਪੈਸ਼ਕਾਰਿਆਂ, ਚਹੁਂ ਜੁਗੀਂ, ਨਵਾਂ ਤਗਵਣਾਂ, ਆਥਵਣਾਂ, ਚਕੀਂ ਮਨਮੁਖਵਾਂ ।)

2) ਅਦ੍ਧਕ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦ ਦਬਟੀਐ, ਸੁਰਟੀਐ, ਤਵਟੀਐ, ਜਗ, ਤਚਚ ਹਦ੍ਦੀ, ਸਤੇ, ਅਟਲਲ ਆਦਿ ।

(ਅੱਧਕ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦ - ਦਬਟੀਐ, ਮੁਰੱਟੀਐ, ਉਵੱਟੀਐ, ਜੱਗ, ਉੱਚ ਹੱਦੀ, ਸੱਤੇ, ਅਟਲਲ ਆਦਿ ।)

3) ਦਿਤੋਸੁ ਕਾ ਦਿਤੋਸ, ਸੁਧੋਸੁ ਕਾ ਸੁਧੋਸ, ਪਿਯੂ ਕਾ ਪਿਯ, ਸੂਆ ਕਾ ਸੋਆ ਪਾਠ ਕਰਨਾ ਹੈ ।

(ਦਿਤੋਸੁ ਦਾ ਦਿਤੋਸ, ਸੁਧੋਸੁ ਦਾ ਸੁਧੋਸ, ਪਿਯੂ ਦਾ ਪਿਊ, ਸੂਆ ਦਾ ਮੋਆ ਪਾਠ ਕਰਦਾ ਹੈ ।)
